**साधारणीकरण का सिद्धांत**

**हिंदी प्रतिष्ठा, तृतीय वर्ष (पार्ट-3), पत्र-7**

रस सिद्धांत में साधारणीकरण का विशेष महत्व है | वस्तुतः साधारणीकरण के बिना रसानुभूति हो ही नहीं सकती | इस सिद्धांत का प्रतिपादन करने का श्रेय रस सूत्र के तीसरे व्याख्याता आचार्य 'भट्टनायक' को है |

साधारणीकरण का अर्थ है- सामान्यीकरण | इस प्रक्रिया में विभावादि का विशेषत्व समाप्त हो जाता है और वे सामान्य प्रतीत होने लगते हैं, अर्थात शकुंतला, शकुंतला न रह कर कामिनी मात्र रह जाती है | रंगमंच पर यशोदा-कृष्ण के प्रसंग में यशोदा कृष्ण के प्रति वात्सल्य भाव का अनुभव करती है | दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि काव्य में वर्णित आश्रय (यशोदा) के साथ दर्शक (समाज) की अनुभूति का तादात्म्य हो जाता है | साथ ही कृष्ण केवल यशोदा के पुत्र न रहकर सबको अपने पुत्र प्रतीत होते हैं अर्थात् सबके वात्सल्य भाव का आलंबन बन जाते हैं |

साधारणीकरण के संबंध में विभिन्न विद्वानों ने जो मत प्रस्तुत किए हैं वे इस प्रकार हैं:-

(1)भट्टनायक का मत :- भट्टनायक ने साधारणीकरण की परिभाषा निम्न शब्दों में दी है-

"भावकत्वं साधारणीकरणं तेन हि व्यापारेण विभावादय: स्थायी च साधारणी क्रियन्ते |"

अर्थात् भावकत्व साधारणीकरण है | इस व्यापार से विभावादि और स्थायी भावों का साधारणीकरण होता है | भट्टनायक शब्द रूप काव्य के तीन व्यापार मानते हैं-

1) अभिद्या व्यापार

2) भावकत्व व्यापार

3) भोजकत्व व्यापार |

इनमें से भावकत्व ही साधारणीकरण है | साधारणीकरण से पहले दर्शक सीता, राम, दुष्यंत, शकुंतला आदि को व्यक्ति विशेष के रूप में हीं ग्रहण करता है किंतु साधारणीकरण के उपरांत दुष्यंत और शकुंतला तथा सीता और राम का विशेषत्व समाप्त हो जाता है, तथा वे सामान्य प्रतीत होने लगते हैं |

स्पष्ट है कि भट्टनायक विभावादि के सामान्य हो जाने को साधारणीकरण मानते हैं | विभावादि के अंतर्गत स्थायी भाव, संचारी भाव, आलंबन विभाव आदि सभी आ जाते हैं |

(2)अभिनवगुप्त के मतानुसार :- अभिनवगुप्त का मत है कि साधारणीकरण हो जाने पर विभावादि ममत्व और परत्व की भावना से परे हो जाते हैं | दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि साधारणीकरण की अवस्था में भाव की अनुभूति तो होती है परंतु यह भाव किसका है, इसका कोई ध्यान नहीं रहता | अभिनवगुप्त के अनुसार साधारणीकरण के दो स्तर है -

1) पहले स्तर पर विभावादि का व्यक्ति विशिष्ट संबंध छूट जाता है |

2) दूसरे स्तर पर सामाजिक का व्यक्तित्व बंधन नष्ट हो जाता है |

(3) आचार्य विश्वनाथ के मतानुसार :- आचार्य विश्वनाथ का मानना है कि विभावादि का अपने-पराये की भावना से मुक्त हो जाना साधारणीकरण कहलाता है | विभावादि के संबंध में यह मेरे हैं अथवा मेरे नहीं हैं, दूसरे के हैं अथवा दूसरे के नहीं हैं, इस प्रकार का विशेषीकरण नहीं होता |

आचार्य विश्वनाथ ने साधारणीकरण के प्रसंग में पाठक का आश्रय के साथ तादात्म्य भी माना है |

(4) अचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार :- आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने चिंतामणि में साधारणीकरण संबंधी अपना मत प्रस्तुत करते हुए मौलिक ढंग से विचार किया है | वह आलंबनत्व धर्म का साधारणीकरण मानते हैं | उनके मत इस प्रकार हैं-

1) जब तक किसी भाव का कोई विषय इस रूप में नहीं लाया जाता कि वह सामान्यत: सबके उसी भाव का आलंबन हो सके, तब तक उसमें रसोदबोधन की पूर्णशक्ति नहीं आती | विषय का इस रूप में लाया जाना ही साधारणीकरण कहलाता है |

2) काव्य का विषय सदा विशेष रहता है, सामान्य नहीं | वह व्यक्ति सामने लाता है, जाति नहीं |

3) साधारणीकरण का अभिप्राय यह है कि पाठक या श्रोता के मन में जो भाव-विशेष या वस्तु-विशेष आती है वह जैसा काव्य में वर्णित आश्रय का आलंबन होती है, वैसे ही सहृदय पाठकों या श्रोताओं के भाव का आलंबन हो जाती है |

शुक्ल जी आलंबन धर्म का साधारणीकरण मानते हैं |

(5) आचार्य श्यामसुंदर दास का मत :- श्यामसुंदर दास पाठक अथवा श्रोता के चित्त का साधारणीकरण मानते हैं | साधारणीकरण की व्याख्या करने में उन्होंने 'मधुमती' भूमिका की परिकल्पना की है | 'मधुमती' भूमिका में जब चित्त पहुंच जाता है तब वह निर्वितर्क अवस्था में होता है |

इस प्रकार विविध आचार्यों द्वारा साधारणीकरण के स्वरूप प्रतिपादन से स्पष्ट है कि असाधारण (विशेष) का साधारण रूप ग्रहण कर लेना साधारणीकरण कहलाता है |

आवश्यक निर्देश - समस्त विद्यार्थीगण को निर्देशित किया जाता है कि वह इसी तरह अन्य पाठों का भी अध्ययन कर पाठ के मूल भाव को समझें । उससे संबंधित प्रश्न उत्तर का अभ्यास करें। विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत पाठ्य सामग्रियों में मूल पाठ के साथ पाठ का सारांश, उसका उद्देश्य ,लेखक परिचय जैसे आवश्यक तत्व संकलित हैं  जिसका अध्ययन विद्यार्थियों के लिए अति आवश्यक है ।

डॉ. बद्रीनारायण सिंह

समन्वयक हिन्दी विभाग

नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय